पीएचडी के दो विषयों में शोधपत्रों के प्रकाशन के नियमों में दी ढील

अंग्रेजी और लॉ में पीएचडी के शोधपत्र प्रकाशन में बनी थी विसंगति

संवाद न्यूज एजेंसी

देहरादून। वीर माधो सिंह भंडारी उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय की ओर से पीएचडी आर्डिनेंस 2020 में संशोधन करते हुए लॉ और अंग्रेजी के शोधपत्रों के प्रकाशन की अनिवार्यता में ढील दी है। इसके तहत अब अंग्रेजी के शोधार्थियों को एससीआई (साइंस साइटेशन इंडेक्स) जर्नल्स में मात्र एक शोधपत्र प्रकाशित करना होगा। जबकि लॉ के शोधार्थियों के इस जर्नल में शोधपत्र प्रकाशन की अनिवार्यता समाप्त कर दी गई है।

विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. ओंकार सिंह ने बताया कि पीएचडी कर रहे छात्रों को पीएचडी ऑर्डिनेंस 2020 के तहत शोधपत्रों का प्रकाशन कराना होता है। शोधपत्र प्रकाशन के लिए जर्नल भी निर्धारित होते हैं। लेकिन ऑर्डिनेंस के तहत लॉ और अंग्रेजी के शोधार्थियों को एससीआई जर्नल में शोधपत्र प्रकाशित कराने में तकनीकी दिक्कतें आ रही थी। इस विसंगति को दूर करने के लिए और शोधपत्र प्रकाशन की अनिवार्यता में शिथिलीकरण को लेकर कुलपति की ओर से कमेटी का गठन किया गया था। 18 जुलाई को कमेटी की बैठक में लिए शोधपत्र के प्रकाशन

यूटीयू ने कमेटी के निर्णय का विद्या परिषद से प्राप्त किया अनुमोदन

में संशोधन का निर्णय लिया गया। जिसके बाद इस निर्णय का विद्या परिषद से अनुमोदन प्राप्त किया गया।

अब संशोधन लागू होने से लॉ और अंग्रेजी के शोधार्थियों को राहत मिलेगी। कुलपति प्रो. ओंकार सिंह ने बताया कि अंग्रेजी के शोधार्थियों अनिवार्य रूप दो शोधपत्रों के प्रकाशन में से अब एक शोधपत्र एससीआई और दूसरा शोधपत्र स्कोपस जर्नल में प्रकाशित किया जा सकता है। जबकि लॉ के शोधार्थियों को दोनों शोधपत्र स्कोपस या फिर आर्डिनेंस में दिए गए जर्नल में प्रकाशित कराना होगा। इसके अलावा लॉ एवं अंग्रेजी के शोधार्थियों को इससे संबंधित पेपर किसी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भी प्रस्तुत करना होगा।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में वैश्विक लीडर है भारत : कुलपति

देहरादून। वीर माधो सिंह भंडारी उत्तराखंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में शुक्रवार को पहला राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया गया। अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति छात्र-छात्राओं के रुझान को बढ़ावा देने के उददेश्य से आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. ओंकार सिंह ने कहा कि हमारा देश पूरी दुनिया में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक लीडर बन चुका है। कुलपति ने बताया कि आज ही के दिन 23 अगस्त को इसरो के चंद्रयान-3 के विक्रम रोवर ने चांद के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडिंग की थी। दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष में उतरकर चंद्रमा को छूना किसी के भी जीवन के अविस्मरणीय क्षण होते हैं, जो समाज में अनुसंधान और प्रौद्योगिकी पर अंतरिक्ष अन्वेषण के गहरे प्रभाव पर बल देती है। कार्यक्रम में उत्तराखंड स्पेस एप्लिकेशन सेंटर (यूसैक) की वैज्ञानिक एवं इंजीनियर डॉ. अरुणा रानी ने विचार रखे। इस मौके पर कुलसचिव डॉ. सत्येंद्र सिंह, परीक्षा नियंत्रक डॉ. विनय कुमार पटेल, परिसर संस्थान महिला प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डॉ. मनोज कुमार पांडा मौजूद रहे। संवाद